शोध - प्रबन्ध - सार

"कवीन्द्र परमानन्द विरचित शिवभारत का आलोचनात्मक अध्ययन"

प्रस्तुतकर्त्री

रिज़वाना परवीन

"कवीन्द्र परमानन्द विरचित शिवभारत का आलोचनात्मक अध्ययन"

शोध-प्रबन्ध - सार

इतिहास का आश्रय लेकर काव्य लिखने की परिपाटी संस्कृत काव्य - परम्परा में कोई नवीन नहीं है । कवियों ने अपने आश्रयदाताओं की कीर्ति को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए इस कोटि के काव्यों का प्रणयन किया है । कवीन्द्र परमानन्द ने भी शिवाजी के चरित्र - वर्णन के लिए "शिवभारत" नामक ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखा जोकि संस्कृत के ऐतिहासिक महाकाव्यों में प्रमुख स्थान रखता है । इतिहास प्रसिद्ध शिवाजी के चारित्रिक गुणों को ध्यान में रखते हुए कवि ने इस ग्रन्थ की रचना की है । प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध इसी शिवभारत का आलोचनात्मक अध्ययन है । आलोचना में ऐतिहासिकता की अपेक्षा महाकाव्यत्व का ही विवेचन अधिक किया गया है ।

प्रस्तुत शोध - प्रबन्ध सात अध्यायों में विभक्त है । प्रथम अध्याय में कवीन्द्र परमानन्द के परिचय -स्थिति -काल, बहुज्ञता, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है । कवि का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है -

कवीन्द्र परमानन्द भट्टगोविन्द का पुत्र था तथा अहमदनगर के "नेवासा" नामक स्थान का रहने वाला, काश्यप गोत्र का ब्राह्मण था । इसकी कुलदेवी "एक वीरा" है जिसकी कृपा से कवि ने वाणी के वैभव को प्राप्त किया ।

कवीन्द्र परमानन्द महान शास्त्रज्ञ, अध्यात्मवेत्ता व पौराणिक प्रवर अर्थात् मार्मिक पौराणिक पण्डित था । कवि ने बनारस में अपना अध्ययन अध्यापन कार्य सम्पन्न किया । तत्पश्चात् वह शाह जी के दरबार में (सम्भवतः बंगलौर में) आया उसके बाद रायगढ़, जहाँ शिवाजी ने अपने स्वराज्य की पहली राजधानी स्थापित की थी, के लिए प्रस्थान किया ।

शक् 1586 से पहले ही परमानन्द एक महान कवि के रूप में प्रसिद्ध हो चुका था । इसी वर्ष राजापुर में धर्मनिर्णयार्थ एक महान सभा हुई । इस सभा में अन्य पण्डितों के साथ परमानन्द का नामोल्लेख प्राप्त होता है ।[1] जिसमें कवीन्द्र की गणना गागाभट्टादि शिवसमकालीन काशीस्थ पण्डितों में की है । इसके अतिरिक्त शक् 1596 में गागाभट्टादि ने शिवाजी के राज्याभिषेक समारोह को सुशोभित किया था, यह बात इतिहास प्रसिद्ध है ।

कवीन्द्र परमामन्द शिवाजी के दरबारी कवि थे । चरित्र - लेखन का कार्य स्वयं शिवाजी ने ही परमानन्द को सौंपा था ।[2] ऋ

---

1. तत्र सभायां स्थिताः पण्डिताः ।
   गागाभट्टस्त्वनूचानो निगमागमवित्तमः ।
   सभायां शुशुभे राज्ञः सुधर्मायां यथागुरुः ।। ।
   दीक्षितः शितिकण्ठश्च रघुनाथो बुधाधिपः ।
   कवीन्द्रः परमानन्दो महादेवश्च पण्डितः ।। 2
   प्रभाकर उपाध्यायस्तथा श्री रंगशास्त्रिणः ।

2. - - - - - - - - - - - - - - - - ।
   स एकदात्मनिष्ठं मां प्रसादेदमभाषत ।।
   यानि - यानि चरित्राणि विहितानि मया भुवि ।
   विधीयन्ते च सुमते तानि सर्वाणि वर्णय ।।
   मालभूपमुपक्रम्य प्रथितं मत्पितामहम् ।
   कथामेतां महाभाग महनीयां निरूपय ।।

   शिवभारत, अध्याय 1, श्लो० 25 - 27 पृ० 2

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि कवि शिवसमकालीन था ।

प्रस्तुत ग्रन्थ में केवल दो घटनाएं ऐसी हैं जो समय को बताती हैं, इनमें पहली शिवाजी का जन्म तथा दूसरी अफजलखान का वध है । ये दोनों घटनाएं एक दम सत्य हैं । कथानकों के प्रसंग को अत्यधिक सूक्ष्मता से देखने पर भी कवि का शिवसमकालीन होना सिद्ध हो जाता है ।

शिवाजी के समय में लिखे गए ग्रन्थों में शिवाजी को विष्णु का अवतार कहा गया है तथा शिवभारत में भी शिवाजी विष्णु का अवतार थे इस प्रकार कहा गया है, जबकि बाद के ग्रन्थों में शिवाजी को शंकर का अवतार कहा गया है । इस प्रकार इन सब बातों से यह सिद्ध हो जाता है कि कवीन्द्र परमानन्द शिवाजी के समकालीन थे ।

सम्पूर्ण शिवभारत में प्रत्येक प्रसंग के वर्णन में ग्रन्थकार की सूक्ष्म दृष्टि व मार्मिकता सर्वत्र ही दृष्टिगोचर होती है । ये सब वर्णन कवि की व्यापक व कुशाग्र बुद्धि के परिचायक हैं । यदि कवि शिवसमकालीन नहीं होता तो किसी भी प्रसंग का इतना विस्तृत तथा मार्मिक वर्णन करने में समर्थ नहीं हो सकता था ।

बहुज्ञता पक्ष में कवि के पौराणिक, भौगोलिक, अर्थशास्त्रीय, राजनीतिक, ऐतिहासिक एवं सामरिक ज्ञान का परिचय दिया गया है । तत्पश्चात् कवि की काव्य-कला सम्बन्धी मान्यताओं का विश्लेषण किया गया है अर्थात् कवि द्वारा काव्य में प्रयुक्त भाषा, शैली, रस, छन्द अलंकार आदि । काव्य की दृष्टि से शिवभारत एक महत्त्वपूर्ण काव्य है । भाष प्रभुत्व, अपार शब्द सम्पत्ति, ओजस्वी व प्रसादयुक्त वर्णनशैली

इत्यादि अलौकिक गुणों के कारण ही कवि को कवीन्द्र पदवी से विभूषित किया गया, जो कि सर्वथा उचित ही है ।

कवीन्द्र परमानन्द के नाम से केवल दो ग्रन्थ प्राप्त होते हैं । §1§ शिवभारत §2§ परमानन्द काव्य ।

"शिवभारत" तन्जौर सरस्वती महल ग्रन्थालय में उपलब्ध पाण्डुलिपि के आधार पर यह ग्रन्थ प्रकाशित किया गया । पूना से 1927 में मराठी अनुवाद के साथ एस०एम० दिवेकर ने प्रकाशित कराया । इसकी विस्तृत मराठी प्रस्तावना में शिवाजी के चरित्र का महत्त्व बताकर जैसे भारत के आधार पर विस्तृत महाभारत की रचना हुई, उसी प्रकार शिवभारत के आधार पर विस्तृत शिवचरित्र की रचना की जा सकती है, ऐसा अभिप्राय व्यक्त किया है । इस प्रस्तावना में शिवाजी के चरित्र के अन्य साधनों के साथ शिवभारत की तुलना भी की गई है, किन्तु सम्पूर्ण शिवभारत कैसे हो सकता है तथा साहित्यिक दृष्ट्या उसका क्या महत्त्व हो सकता है ? इन बातों का प्रस्तावना में विचार नहीं किया गया है । सर जदुनाथ सरकार तो इसके "शिवभारत" शीर्षक से ही सहमत नहीं है, उनके अनुसार इस ग्रन्थ का वास्तविक नाम "सूर्यवंशम्" था §कालिदास के रघुवंश के आधार पर § किन्तु दिवेकर ने इसको "शिवभारत" नामक शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित किया जो सरकार के अनुसार गलत है ।

आनन्दाश्रम संस्था से 1930 में शिवभारत का दूसरा संस्करण पूना से प्रकाशित हुआ । इसके लिए एक अधिक पाण्डुलिपि का प्रयोग किया गया जो कि अत्यन्त प्राचीन है, संभवत: ग्रन्थकार की समकालीन भी हो

सकती है, ऐसा प्रकाशकों का अभिप्राय है । प्रकाशकों ने अपने निवेदन में तथा प्रस्तावनाकार सदाशिव भिडे ने शिवाजी के गौरव पर विस्तार से लिखा है । शिवभारत के इन दोनों संस्करणों में केवल इकत्तीस अध्याय पूर्ण हैं तथा बत्तीसवाँ अपूर्ण है इस अध्याय के केवल 9 श्लोक ही प्राप्त होते हैं । अध्याय के अन्त में ग्रन्थ -समाप्ति की कोई सूचना भी नहीं है । इस ग्रन्थ में कुल मिलाकर दो हजार दो सौ बासठ (2262) श्लोक हैं । प्रत्येक अध्याय की समाप्ति पर "इत्यनपुराणे सूर्यवंश निवासकर परमानन्द कवीन्द्र प्रकाशितायामध्याय शतसंमितायां वेयासिक्यां संहितायां - - - - - - - - - - अध्याय : ।" इन पंक्तियों का प्रयोग हुआ है ; किन्तु बत्तीसवें अध्याय में इन पंक्तियों का प्रयोग नहीं है तथा नौ श्लोकों के बाद ही ग्रन्थ समाप्त हो जाता है । इस ग्रन्थ की अब तक जो हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त हुई , उनमें भी केवल इतना ही ग्रन्थ प्राप्त होता है । इससे आगे की कोई भी सूचना प्राप्त नहीं होती, किन्तु जो ग्रन्थ आज हमारे समक्ष है उसका अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि यदि यह ग्रन्थ पूर्ण होता तो अवश्यमेव महाभारत के समान विशाल होता ।

इस ग्रन्थ में मालो जी से लेकर शिवाजी के शृंगारपुर हस्तगत करने तक की घटनाओं का वर्णन है अर्थात् इसमें लगभग 1580 से लेकर 1661 तक (लगभग 80 वर्ष का समय) का वर्णन प्राप्त होता है ।

शिवभारत के अतिरिक्त एक अन्य ग्रन्थ (परमानन्द काव्य) कवीन्द्र के नाम से प्राप्त होता है । इस काव्य को "बड़ोदा ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट" से 1952 में गो० स० सरदेसाई ने प्रकाशित किया । सर जदुनाथ

सरकार के अनुसार "परमानन्द काव्य" शिवभारतकार कवीन्द्र परमानन्द द्वारा रचित काव्य है ; किन्तु त्र्यम्बक शंकर शेजवलकर ने इसको परमानन्द कृत नहीं अपितु उसके पुत्र तथा पौत्रों द्वारा रचित माना है । वस्तुत: सम्पूर्ण काव्य का अध्ययन करने पर यही निष्कर्ष निकलता है कि यह काव्य कवीन्द्र परमानन्द कृत हो ही नहीं सकता । इसलिए हम सरकार के इस मत से सहमत नहीं हैं हमें तो शेजवलकर का मत मान्य है । इस प्रकार परमानन्द काव्य की भाषा तथा शैली की चर्चा करते हुए तत्पश्चात "शिवभारत के नाम के विषय में विचार किया गया है । शिवभारत के नाम के विषय में विद्वानों में मतभेद हैं । शिवभारत के अतिरिक्त "सूर्यवंश" तथा "अनुपुराण" इस काव्य के नाम बताए गए हैं । सर जदुनाथ सरकार के अनुसार कालिदास के रघुवंश का अनुकरण करते हुए कवि ने अपने काव्य का नाम "सूर्यवंश" रखा तथा मालवर्मा से लेकर छत्रपति शाहू तक भोंसले वंश के राजाओं का वर्णन इस काव्य में किया है । अध्याय समाप्ति में यह नाम पाया जाता है । रियासतकार गो० स० सरदेसाई ने अध्याय - समाप्ति वाक्य को ही प्रमाण मानते हुए इस ग्रन्थ का नाम "अनुपुराण" माना है । इन दोनों का सम्पादकों पर यह आक्षेप है कि उन्होंने अपनी कल्पना से इस काव्य को "शिवभारत" नाम दे रखा है, किन्तु यह आरोप वास्तविक नहीं है । इस काव्य की पाण्डुलिपि में ही यह नाम पाया जाता है । काव्य में भी शिवाजी का यह भारत के समान विस्तृत चरित्र है यह बताया गया है । इसी को प्राधान्य देते हुए हमने शिवभारत नाम को ही उचित माना है ।

द्वितीय अध्याय में "शिवभारत" के ऐतिहासिक महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए, इसके महाकाव्य सम्बन्धी विधाओं का वर्णन किया गया है । सर्वप्रथम काव्य तथा उसके प्रमुख अंगों - शब्द, अर्थ, अलंकार, छन्द, आत्मा, वर्ण्य विषय, शैली तथा गुण दोष इत्यादि, का वर्णन करते हुए काव्य के प्रकार बताते हुए, महाकाव्य के रूप में शिवभारत का काव्य शास्त्रीय अध्ययन किया गया है । शिवभारत संस्कृत साहित्याचार्यों द्वारा निर्धारित नियमों की कसौटी पर कसने से महाकाव्य के रूप में खरा उतरता है । यद्यपि इसमें काव्यशास्त्रियों द्वारा निर्धारित नियम पूर्णरूपेण प्राप्त नहीं होते हैं । अपूर्ण होने के कारण शिवभारत में कुछ महाकाव्य सम्बन्धी नियमों का अभाव है ; किन्तु ऐसा होने पर भी शिवभारत के महाकाव्य होने में किसी प्रकार का सन्देह नहीं है अर्थात् शिवभारत एक महाकाव्य है क्योंकि आचार्य दण्डी के अनुसार "महाकाव्य के लक्षणों में से यदि कोई लक्षण महाकाव्य में न घटे, किन्तु उसका प्रतिपाद्य अच्छा हो, सहृदय को सहज ही आकृष्ट कर ले तो भी ऐसे काव्य को महाकाव्य की संज्ञा देना उचित ही होगा ।[1]

शिवभारत की कथावस्तु ऐतिहासिक है, नायक, उच्चकुलीन एवं धीरोदात्त नायक के गुणों से सम्पन्न क्षत्रिय है । काव्य वीर रस प्रधान है । अध्याय 8 से अधिक हैं ।

शिवभारत महाकाव्य संस्कृत के ऐतिहासिक महाकाव्यों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है । काव्य में प्रयुक्त सभी घटनाएं इतिहास सम्मत

---

1. दण्डी, काव्यादर्श , 1/20 -22

है, केवल कवि - कल्पना प्रसूत नहीं है । कवि के काव्य का महत्त्व इस दृष्टि से और भी बढ़ जाता है कि इतिहास लेखकों ने इस ग्रन्थ को आधार रूप माना है । कवि ने किसी भी घटना के प्रति कारणों की निराधार कल्पना नहीं की है । इसी कारण "शिवभारत" संस्कृत के ऐतिहासिक महाकाव्यों की परम्परा में एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है ।

तृतीय अध्याय में "साहित्यिक समालोचन के अन्तर्गत काव्य के भावपक्ष तथा कलापक्ष पर विचार किया गया है । भावपक्ष के अन्तर्गत काव्य की आत्मा रस का वर्णन किया गया है । शिवभारत वीर रस प्रधान काव्य है अतः वीर रस अङ्गी है तथा अन्य सभी रस अंग रूप में प्रयुक्त किये गए हैं । वीर रस के चित्रण में कवि ने विभिन्न भावों, अनुभावों एवं संचारियों का सुन्दर प्रयोग कर पाठकों के हृदय में स्थित उत्साह को वीर रस की स्थिति तक पहुँचाया है ।

शिवभारत में वीर रस के साथ ही साथ करुण, रौद्र तथा वात्सल्य रसों का अंग रूप में वर्णन किया गया है । प्रत्येक रस के चित्रण में न कहीं अनुभूति का अभाव है तथा न कहीं भाषा में शैथिल्य है ।

कलापक्ष के अन्तर्गत कला के स्वरूप तथा भेदों का वर्णन करते हुए काव्य - कला के अंगों पर विचार किया गया है जैसे - अलंकार, छन्द, गुण, भाषा तथा शैली ।

काव्य में शब्दालंकार तथा अर्थालंकार दोनों का प्रयोग किया गया है । शब्दालंकारों में अनुप्रास, यमक तथा श्लेष का प्रयोग हुआ है, तथा अर्थालंकारों के अन्तर्गत विशेष रूप से उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अतिशयोक्ति,

सहोक्ति, विनोक्ति, अपह्नुति, विरोध, कारणमाला, दृष्टान्त, अर्थान्तरन्यास इत्यादि का प्रयोग देखने को मिलता है । कवि ने किसी भी अलंकार के प्रयोग से वर्ण्य विषय को अशोभन नहीं बनाया है, अपितु इसके विपरीत उनके अलंकारों की मनोहारी छटा वर्ण्य विषय को जीवन्त करने के साथ - साथ कविता -कामिनी के सौन्दर्य को बढ़ा देती हैं ।

कवि ने महाकाव्य के निर्धारित नियमों के आधार पर अपने काव्य के प्रत्येक अध्याय में एक छन्द का प्रयोग किया है तथा अध्याय के अन्त में छन्द परिवर्तन किया है किन्तु कहीं - कहीं एक से अधिक छन्दों का भी प्रयोग किया गया है । कवि द्वारा प्रयुक्त सभी छन्द काव्य में प्रसाद गुण का संचार करने वाले हैं । कवि ने छन्दों का विषयानुकूल चयन किया है । शिवभारत का मुख्य छन्द अनुष्टुप् ही है किन्तु इसके अतिरिक्त कवि ने पुष्पिताग्रा, स्रग्धरा, प्रहर्षिणी, मालिनी, शार्दूलविक्रीडित, शिखरिणी, वसन्ततिलका, हरिणी, रथोद्धता, इन्द्रवज्रा इत्यादि का भी प्रयोग किया है ।

शिवभारत में प्रसाद, माधुर्य तथा ओज तीनों गुणों का प्रयोग किया गया है किन्तु मुख्यतया माधुर्य गुण का ही अधिक प्रयोग हुआ है । जहाँ तक भाषा का प्रश्न है, कवि की भाषा लौकिक संस्कृत है, किन्तु इसके साथ ही उसमें तत्कालीन समाज में प्रचलित फारसी भाषा के भी कुछ शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है । तथापि कवि का भाषा पर पूर्ण अधिकार है । संक्षेप में कवि की भाषा साहित्यिक, सुसंगठित, सुसंस्कृत प्रौढ़ तथा सुमधुर है । भाषा के बाद शैली के विषय में चर्चा की गई है,

क्योंकि शैली भावपक्ष तथा कलापक्ष को जोड़ने का साधन है । काव्य - शास्त्रीय दृष्टि से शैली तीन प्रकार की होती है । वैदर्भी, गौड़ी तथा पाञ्चाली शैली । कवीन्द्र परमानन्द ने अपने "शिवभारत" नामक ग्रन्थ में मुख्यतया वैदर्भी शैली का ही प्रयोग किया है किन्तु यत्र - तत्र पाञ्चाली शैली का प्रयोग भी देखने को मिलता है । इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि कवीन्द्र परमानन्द ने अपने काव्य में प्रधानतया वैदर्भी शैली का ही प्रयोग किया है किन्तु इसके साथ ही माधुर्यमिश्रित पाञ्चाली शैली का भी प्रयोग किया है, किन्तु इसका प्रयोग बहुत कम किया है ।

अन्त में हम कह सकते हैं कि कवीन्द्र परमानन्द ने अपने काव्य में कला के प्रायः सभी भेदों का प्रयोग किया है । कवि का कला - प्रयोग काव्य में किसी भी प्रकार का असन्तुलन नहीं लाता, अपितु भावपक्ष को सबल बनाता है । अतः हम निष्पक्ष रूप से कह सकते हैं कि कवीन्द्र परमानन्द ने भावपक्ष तथा कलापक्ष के मणिकाञ्चन संयोग को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है ।

चतुर्थ अध्याय में "शिवभारत" के आधार पर शिवाजी के जीवन - चरित्र पर विचार किया गया है । शिवाजी काव्य के नायक हैं । धीर - वीर - क्षत्रिय लोक रंजक एवं लोकरक्षक हैं । कवि ने शिवाजी को विष्णु के अवतार - रूप में चित्रित किया है । शिवाजी एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्ति हैं सम्पूर्ण ग्रन्थ ही शिवाजी के ऊपर लिखा गया है । कवि ने शिवाजी के अनेक गुणों का वर्णन इस प्रकार किया है -

- - - - - - - - - - - - - - - - ।

मनस्वी सुप्रसन्नात्मा प्रतापी विजितेन्द्रियः ।।

भीमादपि महाभीमः सीमा सर्वधनुर्भृताम् । धीमानुदारचरित श्रीमानद्भुत-
विक्रमः ।

कृती कृतज्ञः सुकृती कृतात्मा कृतलक्षणः । वक्तता वाक्यस्य सत्यस्य श्रोता
वातिविचक्षणः ।

देवद्विजगवां गोप्ता दुर्यान्तयवनान्तकः । प्रपन्नानां परित्राता प्रजानां
प्रियकारकः ।।[1]

कवि ने शिवाजी की शिशु लीलाओं का अत्यन्त सुन्दर तथा हृदयग्राही वर्णन किया है । शिवाजी को अत्यधिक पितृवत्सल दिखाया है, अपने पिता शाह जी को महमूद आदिलशाह द्वारा बन्दी बनाए जाने की बात सुनकर वह अत्यधिक क्रोधित होते हैं तथा इस अपकार का बदला लेने के लिए कहते हैं । अपने पिता (शाह जी) के लिए वे पुरन्दर तथा सिंहगढ़ दोनों को त्याग देते हैं । शिवाजी को अत्यधिक वीर तथा समयानुसार कार्य करने वाला तथा तीक्ष्ण बुद्धि वाला कहा है । अपने विवेक के कारण ही शिवाजी अफजल खान जैसे वीर तथा विशालकाय व्यक्ति को मारने में समर्थ हो सके तथा कार्तलबखान नामक सेनापति (जिसको शाइस्ताखान ने एक विशाल सेना के साथ भेजा था) के साथ उसकी सेना को भी परास्त कर सके । कवि ने तो यहाँ तक वर्णन किया है कि शिवाजी बिना सिद्धाञ्जन (एक ऐसा यन्त्र जिसको आँखों पर लगाकर

---

1. शिवभारत, अध्याय-1, श्लो0 12 - 15 , पृ0 - 1

देखने पर भूमिगत धन दिखाई दे जाता है) का प्रयोग किये यह जान लेते थे कि धन कहाँ छुपा हो सकता है । शिवाजी ने समुद्र में आने वाले व्यापारियों से भी कर वसूली प्रारम्भ कर दी । कवि ने शिवभारत में शिवाजी का इस प्रकार चित्रण किया है ।

पंचम अध्याय में शिवभारत में चित्रित अन्य ऐतिहासिक व्यक्तियों पर प्रकाश डाला गया है । इस काव्य के अधिकांश पात्र ऐतिहासिक ही हैं । शिवाजी के पिता शाह जी तथा पितामह मालो जी के साथ ही साथ मालो जी के भाई बिट्ठो जी तथा उनके पुत्रों का भी वर्णन प्राप्त होता है । शाह जी की पत्नी तथा शिवाजी की माता जिजाबाई का वर्णन है । जिजाबाई को एक वीरांगना के रूप में चित्रित किया गया है इनके अतिरिक्त दौलताबाद के निजामशाह, उसका मन्त्री मलिक अम्बर तथा यादव राज (शाह जी के श्वसुर) इत्यादि के साथ - साथ बीजापुर के आदिलशाही शासकों का वर्णन है इनमें मुख्य रूप से इब्राहीम आदिलशाह, महमूद, आदिलशाह तथा अली आदिलशाह का वर्णन प्राप्त होता है तथा दिल्ली के मुगलों का भी वर्णन प्राप्त होता है । इनमें जहाँगीर, शाहजहाँ तथा औरंगजेब का वर्णन मिलता है औरंगजेब के मामा शाइस्ताखान तथा सेनापति कार्तलबखान इत्यादि के वर्णन के साथ - साथ राजव्याघ्री नामक स्त्री भी सेनापतित्व करती दिखाई गई है इससे ऐसा अनुमान होता है कि औरंगजेब की सेना में स्त्रियों की भी सेना थी ।

महमूद आदिलशाह द्वारा भेजी गई सेना का सेनापति मुस्तुफाखान (जिसने धोखे से रात्रि में शाह जी को बन्दी बना लिया)

के वर्णन के साथ ही साथ अली आदिलशाह द्वारा भेजे गए अफजलखान का वर्णन विस्तार से मिलता है जो बाद में शिवाजी के हाथों मृत्यु को प्राप्त हुआ । अफजलखान के पुत्र फाजिल का भी वर्णन प्राप्त होता है । ये सब ऐतिहासिक व्यक्ति हैं ।

षष्ठ अध्याय लोकचित्रण है इसके अन्तर्गत् अ तत्कालीन समाज तथा संस्कृति पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है उस समय समाज स्थिति में अत्यधिक अस्थिरता आ गई थी, क्योंकि लगातार युद्ध होते रहते थे । वर्ण - व्यवस्था भी प्रायः नहीं के बराबर ही थी तथा समाज में अनेक प्रकार के अन्धविश्वासों का प्रचलन था अनेक संस्कारों का वर्णन प्राप्त होता है जैसे - जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, उपवेशन तथा विवाह इत्यादि संस्कारों का वर्णन प्राप्त होता है । उस समय लोकजीवन में धार्मिक विचारों की प्रधानता थी तथा अनेक प्रकार की विद्याओं का प्रचलन था ।

लोक-जीवन में स्त्रियों को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था घर तथा बाहर दोनों ही स्थानों पर स्त्रियाँ आदर की दृष्टि से देखी जाती थीं । तभी तत्कालीन समाज में स्त्री सेनापत्य करती हुई भी दर्शायी गई है । उस समय हिन्दु-मुस्लिम का भेदभाव कम था अथवा यह कहें कि प्रायः नहीं था तभी तो मुस्लिम राजाओं के साथ हिन्दू सैनिक तथा हिन्दुओं के साथ मुस्लिम सैनिकों का वर्णन प्राप्त होता है ।

शिवभारत शिवाजी को लेकर लिखा गया ग्रन्थ है अतः इसमें हिन्दू समाज का वर्णन स्वाभाविक ही है, किन्तु हिन्दू समाज के साथ

ही साथ इसमें मुस्लिम तथा ईसाई समाज का भी कुछ वर्णन प्राप्त होता है । उत्तर तथा दक्षिण के मुसलामानों को "ताम्र मुख" तथा दक्षिण के मुसलमानों को "श्याम मुख" वाला कहा है । इस समय इन दोनों में लगातार युद्ध होते रहते थे अतः केवल युद्धों का वर्णन ही अधिक मिलता है । मुस्लिम समाज के विषय में अधिक जानकारी नहीं मिलती, किन्तु इनमें भी उत्तर के मुसलमानों को "म्लेच्छ" कहा है जबकि दक्षिण के मुसलमानों के लिए इस प्रकार के अपशब्दों का प्रयोग नहीं किया है । फिरंगी संभवतः डच, पोर्तगीज़ व अंग्रेज़ इन लोगों को यवनों से भी नीच कहा है । इस समय मुसलमानों का राज्य था अतः उनके शासनकाल में हिन्दुओं पर अत्याचार अवश्यमेव होते होंगे तभी इस प्रकार का वर्णन किया है, वैसे तो सेना में दोनों ही जाति के व्यक्ति होते थे । अतः स्पष्ट हो जाता है कि उस समय हिन्दू मुस्लिम का भेदभाव नहीं था ।

सप्तम अध्याय उपसंहार है इसके अन्तर्गत शिवभारत महाकाव्य की महत्ता की चर्चा की गई है शिवभारत सत्रहवीं शताब्दी का प्रख्यात महाकाव्य है । यह एक ऐतिहासिक महाकाव्य है तथा इतिहास लेखकों द्वारा इसको आधार स्वरूप माना गया है इस कारण इस काव्य का महत्त्व और भी बढ़ जाता है । भाषा - सौष्ठव व काव्य-गुणों की दृष्टि से भी यह महाकाव्य बहुत ही आकर्षक है । दुर्भाग्यवश यह काव्य अपूर्ण ही उपलब्ध होता है ; किन्तु उपलब्ध रूप में इसकी श्लोक संख्या रघुवंश जैसे प्रख्यात महाकाव्य की श्लोक - संख्या से दुगुनी है । पूर्ण अवस्था में तो इसके सौ अध्याय होने चाहिए थे । इस प्रकार यह रामायण, महाभारत या पुराणों

जैसा बृहदाकार ग्रन्थ हो सकता है । महाकाव्य की दृष्टि से इसकी विस्तृत चर्चा हमने इस प्रबन्ध में की है । इस प्रकार हम देखते हैं कि ऐतिहासिकता एवं काव्य - कला दोनों ही दृष्टि से "शिवभारत" महाकाव्य संस्कृत काव्य - कोष की अमूल्य निधि है । काव्य - सौन्दर्य एवं रसानुभूति समस्त शिवभारत में अनुस्यूत है ।

MAULANA AZAD LIBRARY
Acc No. T4055
ALIGARH MUSLIM UNIVERSITY, ALIGARH